International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 44-46

प्रभा खेतान : एक समग्र अध्ययन

कंचन भाणावत

शहीद राजेंद्रनगर (गंठेड़ी), तहसील-भदेसर, जिला-चित्तौड़गढ़, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

प्रभा खेतान हिन्दी साहित्य जगत में एक सुविख्यात नाम है। 1 नवम्बर 1942 को दक्षिण कलकत्ता में मारवाड़ी परिवार में जन्मी प्रभा खेतान बहू चर्चित कवयित्री, उपन्यासकारा व चिंतनकारा के रूप में हिन्दी साहित्य जगत के आकाश में ध्रुवतारे के समान उदित हुई। प्रभा खेतान ने अपने जीवन काल में हिन्दी साहित्य जगत को अक्षुण्ण व अनुपम रचनाएँ भेंट स्वरूप प्रदान की है। प्रभाजी जमीन से जुड़ी साहित्यकार थी, इस कारण उनके विचार व मान्यताएँ यथार्थ अनुभवों पर आधारित है। प्रभाजी का जीवन सदैव उपेक्षा व अभावों के मध्य बीता है। जीवन भर वह उनके साथ संघर्ष करती रही, परंतु परिस्थितियों से हार नहीं मानी। उनके सम्पूर्ण जीवन की झलक उनके साहित्य के द्वारा परिलक्षित होती है। उनके साहित्य में शहरी व ग्रामीण परिवेश में महिलाओं की स्थिति को केन्द्रित कर रिश्तों की उधेड़बुन को उजागर किया गया है। उनका साहित्य एक ऐसे अथाह सागर की भांति है, जिसके अर्थपूर्ण मोती पाने के लिए बार-बार सतह तक गोता लगाना पड़ता है।

हिन्दी साहित्य जगत में नारी चिंतक के रूप में प्रख्यात लेखिका, कवयित्री, उपन्यासकारा, चिंतनकार डॉ. प्रभा खेतान का जन्म 1 नवम्बर 1942 को दक्षिण कलकत्ता के सबसे प्रसिद्ध मुहल्ला लेक रोड के मकान नंबर 72 में धनाढय मारवाड़ी परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री लादुराम जी खेतान एक सफल व्यवसायी तथा माता पूरन देवी खेतान एक गृहिणी थी। सात भाई-बहनों में प्रभा जी पाँचवी संतान थी। मारवाड़ी परिवार में लड़की जन्म को मनहूस माना जाता है। वहाँ प्रभा जी ने पाँचवी संतान के तौर पर एक लड़की के रूप में जन्म लिया, इस कारण उनका पूरा बचपन माँ के स्नेह से वंचित व उपेक्षित रूप में बीता। परंतु प्रभा जी अपने पिता की सबसे लाड़ली पुत्री थी और प्रभा जी भी अपने पिता से अधिक स्नेह रखती थी। पिता के सान्निध्य में अधिक रहने के कारण उन्होने भी अपने पिता के व्यवसाय से संबंधित कला को आत्मसात कर लिया। दुर्भाग्यवश नौ वर्ष की अल्पायु में ही उनके पिता का हाथ उनके सिर से उठ गया। उसके बाद उनका बचपन अनेक यातनाओं से भर गया। माँ की उपेक्षा के कारण प्रभा एक दाई की गोद में पली बढ़ी। उनका पूरा बचपन अनाथ के समान गुजरा। इसलिए वह कहती है कि- ''कैसा अनाथ बचपन था अम्मा ने कभी मुझे गोद में लेकर चूमा नहीं। मैं चुपचाप घंटो उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ी रहती। शायद अम्मा मुझे भीतर बुला ले। शायद ..... हाँ, शायद अपनी रज़ाई में सुला ले। मगर नहीं, एक शाश्वत दूरी बनी रही हमेशा हम दोनों के बीच। अम्मा मेरी बातों को समझ ही नहीं पाती थी।''

पिता की मृत्यु के बाद जब घर की ज़िम्मेदारी बड़े भाई के हाथों में आई तो वह घर ही प्रभा जी के लिए असुरक्षित हो गया। प्रभा जी को हर चीज के लिए अपने भाई के आगे हाथ फैलाना पड़ता था। इसी बात का फायदा उनके बड़े भाई उठाते है और उनका शारीरिक शोषण करते है। अपने जीवन में अपने भाई के द्वारा शारीरिक रूप से शोषित होने के कारण उन्हे पुरुष नाम से नफरत हो जाती है और वह भयाक्रांत रहने लगती है।

पिता के गुजरने के बाद उनके घर की आर्थिक स्थिति के सही नहीं होने के कारण उन्हे शिक्षा प्राप्त करने हेतु अनेक कठिनाईयों से गुजरना पड़ा। उनकी माँ उन्हें शिक्षा प्राप्त करने से रोक कर गृह कार्यो में लगाना चाहती थी। परंतु प्रभाजी ने अपने परिवार के साथ संघर्ष करते हुए शिक्षा ग्रहण की और उन्हें अपनी प्रारम्भिक शिक्षा में मन्नु भण्डारी का सहयोग व मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ। स्कुली शिक्षा के पश्चात जब उन्होने दर्शनशास्त्र पढ़ने हेतु कॉलेज में प्रवेश लिया तो वहाँ अपने ही प्रोफेसर के द्वारा प्रेम में धोखा मिला तथा शादी के नाम पर शारीरिक रूप से शोषण का शिकार होना पड़ा। इस कारण उन्हे विवाह के नाम से ही नफरत हो गई। वह कहती है कि – ''मेरी राय में विवाह एक ओवरडेटेड संस्था है मै इस संस्था को ज्यादा तरजीह देने से इंकार करती हूँ।'' ऐसे विचारों को तरजीह देने के कारण वह आजीवन अविवाहित ही रही है।

प्रभा जी का सम्पूर्ण जीवन संघर्षो व विरोधाभासों का गुलदस्ता है उन्हें अपने जीवन में भयावह आर्थिक स्थितियों का सामना करना पड़ा। इस कारण वह चमड़े के व्यवसाय में संलग्न होकर आत्मनिर्भर बन अपने पैरों पर खड़ी हुई और अपने जीवन के सभी आर्थिक संकटों को जड़ से मिटा दिया। प्रभाजी ने अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में कभी समझौतावादी प्रवृति को स्थान नहीं दिया। अपने जीवन के अंतिम दिनों में सीने में तकलीफ होने से जीवन हेतु मृत्यु से भी संघर्ष करना पड़ा। अंतत 20 सितम्बर, 2008 को मृत्यु को विजय प्राप्त हुई और उनका देहावसान हो गया।

एक साहित्यकार के रूप में प्रभा जी की लेखनी निरन्तर कार्यरत रही। जब वह सातवी कक्षा में पढ़ती थी तब उनकी पहली कविता दैनिक 'सुप्रभात' नामक पत्रिका में छपी। तब से वह निरन्तर साहित्य के क्षेत्र में कार्यरत रही। उनके सम्पूर्ण साहित्य पर उनके जीवन की प्रतिच्छाया परिलक्षित होती है। इन्होने अपने साहित्य क्षेत्र में उपन्यास, कविता संग्रह, चिंतन साहित्य, अनुवाद, आत्मकथा, संपादन व लेख आदि का सृजन किया है। जो निम्नानुसार है-

उपन्यास:

1.	आओ पे पे घर चले	1990
2.	तालाबंदी	1991
3.	छिन्नमस्ता	1993
4.	अपने-अपने चेहरे	1994
5.	पीली आँधी	1996
6.	स्त्री-पक्ष	1999
7.	अग्निसंभवा	1992
8.	एड्स	1993

कविता संग्रह:

1.	अपरिचित उजाले	1981
2.	सीढ़िया – चढ़ती हुई मै	1982
3.	एक और आकाश की खोज में	1985
4.	कृष्णधर्मा मै	1986
5.	हुस्नाबानों और अन्य कविताएँ	1987
6.	अहिल्या	1988

चिंतन साहित्य:

1.	सार्त्र का अस्तित्ववाद	1984
2.	शब्दों का मसीहा : सार्त्र	1986
3.	अल्बेयरकामू : वह पहला आदमी	1994
4.	उपनिवेश में स्त्री: मुक्ति-कामना की दस वार्ताएँ	2003
5.	बाजार के बीच: बाजार के खिलाफ भूमंडलीकरण और स्त्री के प्रश्न	2004
6.	भूमंडलीकरण: ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र	2007

अनुवाद:

1.	साँकलों में कैद क्षितिज	1988
2.	स्त्री उपेक्षिता (सीमोद द बोउवार की कृति- द सेकंड सेक्स का अनुवाद)	1991

संपादन:

1.	एक और पहचान	1986
2.	हंस पत्रिका के महिला विशेषांक का संपादन	मार्च-2001

आत्मकथा:

1.	अन्या से अनन्या	-

लेख:

1.	स्त्री विमर्श पर महत्वपूर्ण लेख (पितृसत्ता के नये रूप)	2003
2.	सोफिया टोलस्टोय की डायरी – हंस पत्रिका	2008

प्रभाजी के साहित्यक पर उनके जीवन की परिस्थितियों व परिवेश का प्रभाव सदैव रहा परन्तु उनके विचार व भाव रूपी मूल संवेदनाएँ किसी भी परिवेश की झकड़ में नहीं रही। इनका प्रथम काव्य संग्रह "अपरिचित उजाले" में कुल 64 कविताएँ संकलित है। मेरे और तुम्हारे बीच, कैसा अजीब यह अकेलापन, कुछ शब्दों को उधार ले, मिले हुए दर्दों की, काफी हाउस का कोना आदि भिन्न भिन्न शीर्षकों से संकलित कविताओं में एक अनूठे भाव जगत के दर्शन होते है। कुछ शब्दो को उधार ले प्रेम के कई भावों को उजागर करता है।

"मेरे एक नहीं, तीन मन
एक कविता लिखता है,
एक प्यार करता है,
और एक केवल
अपने लिए जीता है।"[3]

इनका दुसरा काव्य-संग्रह "सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मै" में 61 कविताएँ संकलित है। अंकुर, चाह, एक उदास सुबह, ओ मेरे आत्मन, मुक्ति कहाँ है, अंधेरा खड़ा है, इंतजार, संभावना आदि शीर्षकों से संकलित कविताओं में समाज और व्यक्ति के बीच रिश्तों को चित्रित किया है और उन्होने प्रेम विषय के द्वारा जीवन के यथार्थ को उद्घाटित किया है।

"प्रेम करने की शक्ति
क्या अपने आप में काफी नहीं
यानी आज भी जब तुम्हें चाह पाती हूँ
लगता है कि मैं जिंदा हूँ।"[4]

इनके तीसरे काव्यसंग्रह "एक और आकाश की खोज मै" में कुल 52 कविताओं का संकलन है। तुम्हारी प्रेम भरी आँखे, तूफानो से, ज़िंदगी फैली हुई है, कोई एक फूल खिला बगीचे में, मौत और जिंदगी के बीच, आखिर कब तक आदि शीर्षकों से संबंधित कविताओं के माध्यम से कवयित्री ने 'गागर में सागर' भर दिया है।

मैने नाप लिए है हजारों आकाश
फिर भी, एक और आकाश खोज ने, चल पड़ी हूँ .....?[5]

इनके चौथे काव्य संग्रह 'कृष्णधर्मा मै" एक दीर्घ कविता के माध्यम से अवतारी कृष्ण के द्वारा अकर्मण्य हीन जीवन को त्याग कर्मठ रहने की प्रेरणा दी है। इसकी भूमिका में लिखती है- "इस कविता का मैने चुनाव नहीं किया बल्कि यों कहिए की इस कविता ने मुझको खोज निकाला। यह कविता खुद-ब-खुद टुकड़े-टुकड़े में कलम के सहारे कागज पर उतरती चली गई।"[6]
इनके पाँचवे काव्य-संग्रह "हुस्नबानों और अन्य कविताएँ" में कुल 29 कविताएँ संकलित है। भीड़ के बीच, कविता की खोज में, सड़क कथा, कहाँ होंगे बच्चे, दो लड़कियां, कविता की सामूहिक हत्या, शब्दों की हार आदि शीर्षकों से संबंधित कविताओं के माध्यम से लेखिका ने समकालीन परिवेश में व्याप्त समस्याओं को उजागर किया है।

अब्बा।
अबकी तुम वीडियो मत लाना
अम्मा की साड़ियाँ मत लाना
मत लाना यह सब

बदल देना अपने बक्से को
एक छोटे से घर में .....।[7]

डॉ.प्रभा खेतान का अंतिम काव्य संग्रह "अहल्या" के माध्यम से प्रभाजी ने सम्पूर्ण नारी जाति की मुक्ति का संदेश दिया है-

लौट आओ, अहल्या
मृत्यु के बाद भी जागो तुम।
गूँजता है आज भी
तुम्हारा ही दर्द
मेरे हृदय में।[8]

उपन्यासकार के रूप में प्रभा जी ने आठ उपन्यासों की रचना की है। 'छिन्नमस्ता', 'अपने-अपने चेहरे', 'तालाबंदी', 'स्त्री-पक्ष', 'एड्स', 'अग्निसंभवा', पीली आँधी', आओ पे पे घर चले' आदि इनके प्रसिद्ध उपन्यास है जिसके माध्यम से लेखिका ने भारतीय व वैश्विक स्तर पर नारी की स्थिति को दर्शाया है। इनके प्रथम उपन्यास 'आओ पे पे घर चले' के माध्यम से विदेशी जमीन पर नारी के जीवन की भयावहता को स्पष्ट किया है-"औरत कहाँ नहीं रोती और कब नहीं रोती? वह जितना भी रोती है उतना ही औरत होती जाती है।"[9]

इनका दूसरा उपन्यास 'तालाबंदी' के माध्यम से मारवाड़ी समाज में व्यावसायिक उतार-चढ़ाव के यथार्थ का वास्तविक चित्रण किया गया है। 'अग्निसंभवा' के द्वारा चीनी महिला के द्वारा वैश्विक स्तर पर स्त्री के संघर्ष के साथ मार्क्सवादी दृष्टिकोण व क्रांति का वर्णन किया है। 'एड्स' के द्वारा प्रभाजी ने विश्व स्तर पर व्याप्त लाइलाज बीमारी एड्स की भयावहता को उजागर किया है।

'छिन्नमस्ता', 'अपने-अपने चेहरे, 'स्त्री पक्ष', आदि उपन्यास स्त्री के शोषण, उत्पीड़न व संघर्ष के जीवंत दस्तावेज़ है। इन उपन्यासों में नारी के अपने अस्तित्व को प्रकट करने का संघर्ष है। नारी के आत्म मंथन व उत्पीड़न की कथा है- इसीलिए वह कहती है-"प्यार तो बस एक बार करती है। कभी शादी के पहले, कभी शादी के बाद। इसके बाद तो वह अपने आपको झेलना सिखाती है।"[10]

पीली आँधी उपन्यास में भारत में स्वतंत्रता से पूर्व व्याप्त स्थितियों को मारवाड़ी परिवार के माध्यम से उजागर करते हुए घटनाओं के महत्व को स्पष्ट किया है।

एक चिंतक के रूप में भी प्रभाजी के साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। 'सार्त्र का अस्तित्वाद', शब्दों का मसीहा सार्त्र में सार्त्र की तुलना अन्य दार्शनिकों के साथ कर उनको दर्शन व साहित्य के साथ जोड़ने का प्रयास किया है।" अल्बेयर कामू : "वह पहला आदमी" में अल्बेयर कामू के जीवन की अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है। 'उपनिवेश में स्त्री' व "बाजार के बीच बाजार के खिलाफ" चिंतन साहित्य में नारी के जीवन पर भूमंडलीकरण व उपनिवेश के प्रभाव को स्पष्ट कर नारी मुक्ति के चिंतन को स्पष्ट किया है।

प्रभाजी ने अनुवाद, संपादन व लेख आदि के द्वारा नारी जीवन की उधेड़बून व उसके जीवन के यथार्थ का अंकन किया है। इनकी भाषा भी सरल व सहज भावों से युक्त है।

प्रभा खेतान आधुनिक युग की श्रेष्ठ साहित्यकार है। इन्होने अपने साहित्य संसार में शब्दों के द्वारा सभी मानवीय भावों को उजागर किया है। यह लेखिका संघर्षशील, विद्रोही व नूतनन्वेषी व्यक्तित्व की धारण कर्ता है। इनके भोगे हुए यथार्थ से उत्पन्न साहित्य मन को झकझोर देता है। प्रभाजी ने अपने रचनात्मक लेखन के द्वारा नारी विमर्श व उसके अस्तित्व की पहचान हेतु एक विशाल मंच प्रदान किया है तथा नारी को पुरुषों की सत्ता से पृथक होकर अपनी जमीन व आकाश ढूँढने का संदेश दिया है। साहित्य के द्वारा नारी अस्तित्त्व व अस्मिता में इनका अमूल्य योगदान है। इसी हेतु प्रभाजी 'बोल्ड लेखिका' व नारी चिंतक के रूप में सर्वाधिक चर्चित व विख्यात लेखिका है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ प्रभा खेतान-अन्या से अनन्या, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-31
2. अन्या से अनन्या, हंस, मार्च-2006
3. डॉ प्रभा खेतान-अपरिचित उजाले-कुछ शब्दों का उधार ले, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-80
4. डॉ प्रभा खेतान-सीढिया चढ़ती हुई मै, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या-20
5. डॉ प्रभा खेतान-एक और आकाश की खोज में, अप्रस्तुत प्रकाशन, कलकत्ता
6. डॉ प्रभा खेतान-कृष्णधर्मों मै, स्वर समवेत प्रकाशन, कलकत्ता, पृष्ठ संख्या-4
7. डॉ प्रभा खेतान-हुस्नाबानों और अन्य कविताएँ, स्वर समवेत प्रकाशन, कलकत्ता, पृष्ठ संख्या-14
8. डॉ प्रभा खेतान-अहल्या, सरस्वती विहार प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, पृष्ठ संख्या-18
9. डॉ प्रभा खेतान-आओ पेपे घर चले, सरस्वती विहार, नई दिल्ली।
10. डॉ प्रभा खेतान-अपने-अपने चेहरे, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।